Nāsadīyam
A Multi-Disciplinary National Research Journal (Annual)
Peer Reviewed/Refereed
Available online at: https://nasadiyam.dmmkkr.ac.in/
Volume 3, Issue 1 (Jan – Dec), 2024, Pp 27-29

संगीत के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं

डॉ॰ शालू रानी
सहायक प्रवक्त्री (संगीत गायन विभाग)
दयानन्द महिला महाविद्यालय
कुरूक्षेत्र, हरियाणा, भारत
ईमेलः- shalujoshi62@gmail.com
दूरभाषः 8295590130

संक्षेपिका

बदलते समय के साथ संगीत विषय को भी शिक्षण संस्थाओं में स्थान प्राप्त होने लगा। एक पद्धतिबद्ध निश्चित पाठ्यक्रम, शिक्षण की निश्चित अवधि, सर्वजन सुलभता आदि होने के कारण संगीत की एक संस्थागत सामूहिक शिक्षण प्रणाली सम्पूर्ण देश में व्याप्त हो गई। आज देश के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में संगीत पर अध्ययन अध्यापन हो रहा है तथा संगीत सम्बन्धी शोध भी हो रहे है। विद्यार्थी को स्नातक, स्नातकोतर, डॉक्ट्रेट जैसी उच्चस्तरीय उपाधियां दी जा रही है तथा व्यापक स्तर पर संगीत का शिक्षण-प्रशिक्षण हो रहा है। संगीत सम्बन्धी किसी भी विषय पर प्रकाशित पुस्तकों का अभाव नहीं है।

कुंजी शब्द: संगीत, श्रोता, संगीत-शिक्षा, बौद्धिक विकास, अर्थापार्जन।

शोधपत्र

संगीत के संरक्षण प्रचार-प्रसार की दिशा में शिक्षा तंत्र की अहम भूमिका है। शिक्षा के माध्यम से ही प्राचीन काल से आज तक संगीत एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति, एक काल से दूसरे काल, एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त तक, एक देश से दूसरे देश तक पहुंचता और गुजरता हुआ आज हमारे पास अनमोल धरोहर के रूप में सुरक्षित है।[1]

प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल तक संगीत शिक्षा गुरू शिष्य परम्परा द्वारा विशेष रूप से दी जाती रही। गुरू शिष्य परम्परा में गुरू अपने शिष्य और पुत्र में बिना किसी भेदभाव किए बिना संगीत की शिक्षा दोनों को समान भाव, समान रूप व समान अधिकार से प्रदान करते थे। धीरे-धीरे गुरू शिष्य परम्परा ने घरानों के रूप में मान्यता प्राप्त की। घराने वस्तुतः एक प्रकार के शिक्षण संस्थान ही थे, जोकि पीढ़ी दर पीढ़ी यानि परम्परा के भाव तथा एक विशिष्ट घर की निजी विशेषताओं से युक्त तथा उस्ताद अर्थात् घराने के व्यवस्थापक के रूप में स्वीकारोक्ति से ओत-प्रोत थे।[2]

बदलते समय के साथ संगीत विषय को भी शिक्षण संस्थाओं में स्थान प्राप्त होने लगा। एक पद्धतिबद्ध निश्चित पाठ्यक्रम, शिक्षण की निश्चित समयाविधि, सर्वजन सुलभता आदि होने के कारण संगीत की एक संस्थागत सामूहिक शिक्षण प्रणाली सम्पूर्ण देश में व्याप्त हो गई। आज देश के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में संगीत पर अध्ययन अध्यापन हो रहा है तथा संगीत सम्बन्धी शोध भी हो रहे है। विद्यार्थी को स्नातक, स्नातकोत्तर, डॉक्ट्रेट जैसी उच्चस्तरीय उपाधियां दी जा रही है तथा व्यापक स्तर पर संगीत का शिक्षण-प्रशिक्षण हो रहा है। संगीत सम्बन्धी किसी भी विषय पर प्रकाशित पुस्तकों का अभाव नहीं है।[3]

वर्तमान समय में संगीत क्षेत्र में सर्टिफिकेट कोर्स से लेकर डिग्री कोर्स तक तरह-तरह के कोर्स उपलब्ध हैं। इनमें बैचलर ऑफ एम॰ ए॰ (म्यूजिक), एम॰फिल इन म्यूजिक, पी॰ एच॰ डी॰ इन म्यूजिक जैसे कोर्सेज शामिल है। आज हम जीवन के हर क्षेत्र में गिरावट तथा गिरता स्तर अनुभव करते है। आज मनुष्य के चिन्तन में कमी आ

चुकी है। उसकी वजह से सभी क्षेत्रों में गिरावट का अनुभव होता है। विश्वविद्यालय भी इससे अछूते नहीं रह सकते।[4]

वर्तमान समय में संगीत के क्षेत्र में उच्च शिक्षा का सबसे नकारात्मक बिन्दु यह है कि यह रोजगारपरक नहीं है। संगीत में उच्च शिक्षा प्राप्त अधिकांश विद्यार्थियों के पास संगीत शिक्षण के अतिरिक्त कोई और मार्ग नहीं बचता, क्योंकि एक सफल कलाकार बनने के लिए संगीत की उच्च शिक्षा ही नहीं अन्य कई तत्व भी महत्वपूर्ण होते है। उच्च स्तरीय संगीत शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद विद्यार्थियों के सामने जीवनयापन के पर्याप्त साधन न होने की समस्या खड़ी हो जाती है।[5]

उच्च शिक्षा का स्तर पाठ्यक्रम में निहित रागों की संख्या या विषय सामग्री की बहुलता से नहीं आंका जाना चाहिए। आज संगीत में उच्च शिक्ष का अर्थ केवल स्नातकोतर या डॉक्ट्रेट का प्रमाण पत्र प्राप्त करना रह गया है। विश्वविद्यालय स्तर पर संगीत शिक्षा का रोजगारोन्मुखी बनाना वर्तमान समय में आवश्यक है। संगीत से जुड़ी अनेक ऐसी कलाएं है जिनका ज्ञान संगीत विद्यार्थियों को होना चाहिए। उदाहरण के लिए की-बोर्ड, वाद्यों का प्रशिक्षण, कम्पयूटर का सामान्य ज्ञान, ताल-वाद्यों का प्रशिक्षण आदि। केवल परिवर्तनों को स्थापित कर देना पर्याप्त नहीं है। वर्तमान समय में यह मान्यता दृढ़ होती जा रही है कि संगीत शिक्षा का उद्देश्य ज्ञानार्जन न होकर धनार्जन भी होना चाहिए। विद्या अर्थकारी, यानि विधा प्राप्त करने के उपरांत विद्यार्थी को समुचित व्यवसाय की प्राप्ति हो। संगीत शिक्षण में भी इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता।[6]

संगीत कला का विद्यार्थी भी एक सामाजिक प्राणी है और जीवन संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उसे भी किसी व्यवसाय को अपनाने की आवश्यकता होती है। अतः यह स्वाभाविक है कि लंबी अवधि तक संगीत कला के शिक्षण के बाद वह संगीत से जुड़े किसी व्यवसाय को अपनाना चाहे और वह भी ऐसा व्यवसाय जिसमें अर्थोपार्जन के साथ-साथ कार्य संतुष्टि भी प्राप्त हो और समाज में सम्मान भी प्राप्त हो जैसे शिक्षक, कलाकार, वाद्य मरम्मतकर्ता, संगीत चिकित्सक, स्टूडियों आदि में रिकार्डिंग करने वाले ध्वनि मुद्रक, संगीत शास्त्रज्ञ, संगीत निर्देशक आदि। वर्तमान काल की परिस्थितियों व सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए संगीत शिक्षण प्रणाली को वैज्ञानिक व सुनियोजित रूप देने की आवश्यकता है। संगीत के व्यवसाय को केवल जीवनयापन के लिए ही नहीं वरन् कला व समाज की उन्नति के लिये भी अपनाया जाना श्रेयस्कर है। विद्यार्थी भले ही जिस भी विद्या को अपनाये परन्तु प्रारंभ में उसे सभी विधाओं से परिचित अवश्य होना चाहिए। विद्यार्थियों की शिक्षण व्यवस्था आज के सन्दर्भ में शास्त्रीय संगीत की समस्या है।[7]

घराना-परम्परा से दी गई शिक्षा और आज के युग में दी जाने वाली शिक्षा में अन्तर यह है कि घरानों का बन्धन न होने के कारण स्वतंत्र प्रतिभा का प्रयोग बढ़ गया है। आज आवाज का लगाव, राग की सुन्दरता, राग विस्तार अथवा तबला वादन के हाथ की रख रखाव, लय की सूक्ष्मता एवं विभिन्न घरानों की बंदिशों की प्रस्तुतीकरण में गायन-वादन प्रस्तार इत्यादि। पहले मौखिक शिक्षा पर पूरा बल दिया जाता था, आज मौखिक के साथ-साथ लेखन पद्धति के समन्वय से क्रियात्मक एवं शास्त्र पक्ष भी सुदृढ़ हुआ है। विद्यालय शिक्षा से बौद्धिक विकास, व्यक्तित्व में निखार आया है। परन्तु आज बदलते हुए समय में शास्त्रीय संगीत बहुविध समस्याओं से आक्रान्त है और इस बदलते हुए परिवेश में संगीत का भविष्य संस्थागत शिक्षण पर ही निर्भर है, अतः ऐसे परिवेश में संगीत शिक्षण एवं शिक्षकों की भूमिका अहम् हो जाती है।[8]

वर्तमान समय में आज आम श्रोताओं में सीधा सम्बन्ध होने के कारण संगीतज्ञों के लिए गुणवता के साथ लोकप्रियता की दृष्टि से सन्तुलन बनाए रखना भी आवश्यक हो गया है। परिवहन तथा संचार सुविधाओं से प्राप्त सहजता एवं गतिशीलता और आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि प्रचार माध्यमों के कारण घराने-विशेष की भौगोलिक अथवा शैलीगत सीमा में विशुद्ध रूप बनाए रखना अव्यवहारिक हो गया है। आज जिस रूप में संगीत का शिक्षण हो रहा है, बार-बार समाज के प्रत्येक व्यक्ति के सन्मुख यह प्रश्न आता है कि यह संगीत शिक्षण क्या है? जीवन में इसका क्या उपयोग होगा? तथा समाज को इससे क्या लाभ मिलेगा? ऐसे अनेक प्रश्न जनसाधारण के सामने है। जब वर्तमान संगीत शिक्षा के प्रति लोगों की यह धारणा है तो उसमें नवीन मोड़ देना आवश्यक हो गया है।[9]

नई शिक्षा नीति (NEP) के तहत संगीत कला को बहुत बढ़ावा दिया गया है। नई शिक्षा नीति में छात्रों भावनात्मक बुद्धिमता हासिल करने में मदद मिलेगी। संगीत एवं कला जगत में इस नीति के प्रभाव से अवश्य ही नये आयाम बनेंगे। देश की नई शिक्षा नीति में अब छात्राओं के सामने विषय को लेकर सीमाएँ नहीं है। आज विज्ञान या इंजीनियरिंग के छात्र अपनी रूचि के हिसाब से संगीत विषय का भी चयन कर सकते हैं।[10]

नई शिक्षा नीति में निर्माताओं को ध्यान में रखना होगा कि वर्तमान में शिक्षा का मूल उद्देश्य मानव का विकास करना है और युवाओं को हुनरमंद और योग्य बनाकर ही यह अपनी सार्थकता सिद्ध कर सकेगी।

सन्दर्भ सूची:

1. डॉ॰ गुलशन सक्सेना, 'संगीत' पत्रिका, अप्रैल **2010**, पृ॰ 28
2. पंडित विजय शंकर मिश्र, भारतीय संगीत के नये आयाम, पृ॰ 243
3. एस. भटनागर, संगीत शिक्षण, पृ॰ 4
4. डॉ॰ प्रदीप दीक्षित, सरस संगीत, पृ॰ 113
5. पंडित विजय शंकर मिश्र, भारतीय संगीत के नये आयाम, पृ॰ 244
6. पं. छोटे लाल मिश्र, ताल प्रसून, पृ॰ 15
7. डॉ॰ सुभद्रा चौधरी, संगीत संचयन, पृ॰ 16
8. डॉ॰ सीमा चौधरी, संगीतायन, पृ॰ 50
9. पंडित विजय शंकर मिश्र, भारतीय संगीत के नये आयाम, पृ॰ 248